संवाद

अक्तूबर माह में हम सरलता और सादगी के प्रतीक दो महापुरूषों – महात्मा गांधी और लाल बहादुर शास्त्री की जयंती मानते हैं। दोनों में ही स्वाभिमान, सच्चाई, ईमानदारी और देश के प्रति निष्ठा थी। उनके हृदयों में देशप्रेम की भावना सर्वोपरि थी। देश को आज़ादी दिलाने में गांधी जी की महत्वपूर्ण भूमिका रही। अगस्त माह में ही हमने आज़ादी की वर्षगाँठ मनाई। लेकिन आए दिन घटने वाली बाल-उत्पीड़न, महिलाओं के प्रति अत्याचार आदि घटनाएँ यह सोचने को विवश कर देती हैं कि क्या वास्तव में हमें आज़ादी मिली है? क्या हम अपनी रूढ़िवादी पूर्वाग्रहों से युक्त सोच से आज़ाद हो पाए हैं? आज ज़रूरत इस बात की है कि हम सभी प्रकार के पूर्वाग्रहों से मुक्त होकर सही मायनों में समता आधारित समाज के निर्माण में भागीदार बन सकें। बच्चे ही भावी नागरिक हैं। इसलिए अपनी कक्षाओं में यदि हम समता आधारित समाज की नींव डाल सकें, तो हमारे बच्चे स्वस्थ समाज के निर्माण में अपनी भूमिका का निर्वहन बखूबी कर सकेंगे। हमारी कक्षाएँ ऐसी हों जहाँ सभी बच्चों को सही मायनों में शिक्षा का अधिकार मिले, हर बच्चे को अपनी बात कहने की आज़ादी हो, वह अपनी बात शिक्षा के बिना किसी भय तथा संकोच के कह सके और शिक्षक में उसे सुनने का धैर्य हो।

शिक्षा और समाज का गहरा संबंध है। शिक्षा का उद्देश्य बच्चे के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना है। आज हमारी शिक्षा व्यवस्था भी परंपरागत शिक्षण पद्धति से आज़ादी, शिक्षकों को अपने तरीके से कक्षा संचालित करने की आज़ादी और बच्चों को अभिव्यक्ति की आज़ादी की माँग करती है। नि:शुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार विधेयक 2009 बच्चे को केंद्र में रखते हुए, बिना किसी शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक प्रताड़ना के स्नेहपूर्वक शिक्षा देने की बात कहता है।

बच्चे की आयु, रुचि तथा परिवेश को दृष्टिगत रखते हुए स्नेहपूर्वक उसे सीखने का अवसर दिया जाए तो इसमें कोई संदेह नहीं कि कक्षा का प्रत्येक बच्चा सक्रिय रहेगा, हर बच्चा अपनी बात कहने को आतुर होगा और तभी हमारी कक्षाएँ मुखरित होंगी।

अकादमिक संपादक